IJAER/March-April-2022/Volume-11/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

# डॉ. राममनोहर लोहिया के सामाजिक विचारों का अध्ययन

**श्रीमती सौम्या निगम**
शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय कुकस
जयपुर

**डॉ पी आर मीना**
संकाय सदस्य राजनीति विज्ञान विभाग
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय कुकस
जयपुर

## सार

भारत में समाजवादी विचारधारा को एक आन्दोलन का स्वरूप प्रदान करने तथा उसे प्रभावी रीति से प्रचारित करने वाले चितकों में डॉ . राममनोहर लोहिया का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। वे एक गांधीवादी चिन्तक राजनीतिक , इतिहासकार , अर्थशास्त्री दार्शनिक तथा विख्यात लेखक थे। जीवन के प्रायः सभी पक्षों पर उन्होने गहन चिन्तन किया तथा भारतीय परिस्थितियों में इसे व्यावहारिक बनाने के उपायों का सफलतापूर्वक आजीवन अन्वेषण किया। डॉ . लोहिया गांधीवादी थे लेकिन उनके विचारों में उग्रता थी। वे क्रान्तिकारी थे लेकिन उनके विचारों में असाधारण रचनात्मकता थी। वे एक विख्यात एवं सक्रिय राजनीतज्ञ थे , किन्तु उनकी शैली एवं कार्यो में सिद्धान्तों के प्रति असाधारण लगाव था। उन्होने समाजवाद के महान उददेश्यों की भारतीय संदर्भो में व्याख्या की तथा उसे व्यावहारिक बनाया।

**मुख्य शब्द:** *राममनोहर लोहिया* , *सामाजिक*

## परिचय

डॉ० राममनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च 1910 को उत्तर प्रदेश के अयोध्या जनपद में (वर्तमान—अम्बेडकर नगर जनपद) अकबरपुर नामक स्थान में हुआ था। उनके पिताजी श्री हीरालाल पेशे से अध्यापक व हृदय से सच्चे राष्ट्रभक्त थे। ढाई वर्ष की आयु में ही उनकी माताजी (चन्दा देवी) का देहान्त हो गया।। उन्हें दादी के अलावा सरयूदेई, (परिवार की नाईन) ने पाला। टंडन पाठशाला में चौथी तक पढ़ाई करने के बाद विश्वेश्वरनाथ हाईस्कूल में दाखिल हुए।

उनके पिताजी गाँधीजी के अनुयायी थे। जब वे गांधीजी से मिलने जाते तो राम मनोहर को भी अपने साथ ले जाया करते थे। इसके कारण गांधीजी के विराट व्यक्तित्व का उन पर गहरा असर हुआ। पिताजी के साथ 1918 में अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार शामिल हुए।

बंबई के मारवाड़ी स्कूल में पढ़ाई की। लोकमान्य गंगाधर तिलक की मृत्यु के दिन विद्यालय के लड़कों के साथ 1920 में पहली अगस्त को हड़ताल की। गांधी जी की पुकार पर 10 वर्ष की आयु में स्कूल त्याग दिया। पिताजी को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के आंदोलन के चलते सजा हुई। 1921 में फैजाबाद किसान आंदोलन के दौरान जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात हुई। 1924 में प्रतिनिधि के रूप में कांग्रेस के गया अधिवेशन में शामिल हुए। 1925 में मैट्रिक की परीक्षा दी। कक्षा में 61 प्रतिशत नंबर लाकर प्रथम आए। इंटर की दो वर्ष की पढ़ाई बनारस के काशी विश्वविद्यालय में हुई। कॉलेज के दिनों से ही खद्दर पहनना शुरू कर दिया। 1926 में पिताजी के साथ गौहाटी कांग्रेस अधिवेशन में गए। 1927 में इंटर पास किया तथा आगे की पढ़ाई के लिए कलकत्ता जाकर ताराचंद दत्त स्ट्रीट पर स्थित पोद्दार छात्र हॉस्टल में

रहने लगे। विद्यासागर कॉलेज में दाखिला लिया। अखिल बंग विद्यार्थी परिषद के सम्मेलन में सुभाषचंद्र बोस के न पहुंचने पर उन्होंने सम्मेलन की अध्यक्षता की। 1928 में कलकता में कांग्रेस अधिवेशन में शामिल हुए। 1928 से अखिल भारतीय विद्यार्थी संगठन में सक्रिय हुए। साइमन कमिशन के बहिष्कार के लिए छात्रों के साथ आंदोलन किया। कलकत्ता में युवकों के सम्मेलन में जवाहरलाल नेहरू अध्यक्ष तथा सुभाषचंद्र बोस और लोहिया विषय निर्वाचन समिति के सदस्य चुने गए। 1930 में द्वितीय श्रेणी में बीए की परीक्षा पास की।

### डॉ. लोहिया के सामाजिक एवं राजनीतिक विचार

डॉ.लोहिया के विचारों पर कार्ल मार्क्स एवं महात्मा गाँधी दोनों के विचारों का असाधारण प्रभाव परिलक्षित होता है। उन्होने इनमें अदभुत समन्वय स्थापित किया तथा इनके श्रेष्ठतम तत्वों को समाहित करते हुए नवीन – विचारों का विकास किया।

### इतिहास का चक्रीय सिद्धांत

डॉ.लोहिया के अनुसार इतिहास सरल रेखा की भांति आगे नही बढता है , बल्कि उसकी गति चक्र के समान तथा अपरिवर्तनीय होती है। एक राष्ट्र उन्नति शिखर पर पहुँच सकता है, तथा चक्रीय गति में वह पतन के गर्त में भी पहुँच सकता है। पुनः एक समय ऐसा आ सकता है कि पतन के गर्त में पहुॅचा हुआ राष्ट्र उन्नति करते हुए शिखर पर पहुँच जाय। इस प्रकार राष्ट्रों का उत्थान एवं पतन होता रहता है। उनका कथन था कि वर्गो एवं जातियों तथा विचार प्रेरक प्रवृत्तियों एवं सभ्यताओं के मध्य संघर्ष इतिहास में तब तक चलता रहेगा , जब तक कि मनुष्य में बुराई समाप्त नहीं हो जाती।

उन्हें पूर्ण विश्वास था कि संसार में अंन्ततः विवेकपूर्ण तरीकों से मानव जाति की बहुरंगी एकता स्थापित करने में सफलता प्राप्त हो जाऐगी।

### भौतिकवाद एवं चेतना दोनों को महत्व

डॉ.लोहिया कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धांत को स्वीकार करते थे किन्तु उन्होने चेतना को अधिक महत्वपूर्ण माना। वे सामान्य उददेश्यों तथा आर्थिक उददेश्यों दोनों के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करते थे। उन्होने भौतिकवाद में चेतनावाद के समावेश पर बल दिया।

### जाति और वर्गो में संघर्ष की अवधारणा

डॉ .लोहिया के अनुसार इतिहास में जाति और वर्गो में संघर्ष होता रहता है। इसी से इतिहास को गति मिलती है। जातियों का रूप सुनिश्चित होता है , किन्तु वर्गो की आन्तरिक रचना शिथिल होती हैं। इन दोनों के बीच घडी के पेन्डुलम के समान आन्तरिक क्रियाएं होती रहती है। इन्ही से इतिहास को गति मिलती है। डॉ . लोहिया के अनुसार जातियों में सामान्यतः गतिहीनता और निष्क्रियता पाई जाती है। जब कि वर्ग सामाजिक गतिशीलता की प्रचण्ड शक्तियों के प्रतिनिधि होते हैं। वर्ग संगठित होकर जातियों का रूप धारण कर लेते है। और जातियाँ वर्गो में परिणत हो जाती हैं। मानव जाति का अब तक का इतिहास जातियों ओर वर्गो के बीच आंतरिक संघर्षो का इतिहास है।

### समाजवाद का एशियाई स्वरूप

डॉ लोहिया का विचार था कि एशियाई राष्ट्रों की अपनी विशिष्ट समस्याऐं है , इन्हें एशियाई तरीकों से ही हल किया जाना चाहियें। उनका कथन था कि '' एशिया में जहाँ आर्थिक समस्याऐं मुह बाये खडी हैं , पश्चिमी ढंग का समाजवादी प्रजातंत्र कदापि उपयोगी नही हो सकता। एशिया के लोग रोटी के लिए अपने प्रजातांन्त्रिक अधिकारों को बेचने के लिए सरलता ये तैयार हो जायेगें। परम्परागत तरीके से सोचने पर रोटी की समस्या के समाधान हेतु हमें पूंजीवादी अथवा साम्यवादी अर्थव्यवस्था की स्थापना ही अनिवार्य दिखाई देने लगती है , किन्तु दोनों की अर्थव्यवस्था एक जैसी ही है। दोनों में अंतर केवल इतना है कि पूंजीवाद यदि निजी सम्पति को प्रोत्साहन देता है तो साम्यवाद सार्वजनिक सम्पति कों। पूंजी एवं सत्ता का केन्द्रीकरण दोनों में समान रूप से है। आर्थिक विक्रेन्द्रीकरण अन्ततः बेकारी को बढा देता है। ''

डॉ लोहिया मानते थे कि युरोप का मशीनी समाजवाद एशिया के देशों के लिए उपयुक्त नहीं हैं , क्योकि यहाँ गरीबी अधिक है। उनका कथन था कि परम्परागत आर्थिक विकेन्द्रीकरण से एशिया की गरीबी दूर नही हो सकती है। यहाँ बडी मशीनों के स्थान पर गांधी जी के विचारों का अनुसरण करते हुए छोटी–छोटी मशीनों का प्रयोग करना चाहिये। इस प्रकार कुटीर उद्योगों में धन भी कम लगेगा तथा बेकारी भी घटेगी। डॉ . लोहिया सहकारी कृषि को प्रोत्साहित करने के पक्ष में थे। वे पाश्चात्य समाजवाद कों संवैधानिक एवं विकासवादी निरूपित करतें हुए उसे एशिया के लिए अनुपयोगी मानते थे। उनके अनुसार प्रशासन का प्रजातंत्रीकरण करके कम पूंजी से लगने वाली छोटी मशीनों को लगाकर , सम्पति का समाजीकरण करके एवं आर्थिक तथा राजनीतिक समाजीकरण करके एशियाई समाजवाद के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता हैं।

## साम्यवादियों से असहमति

डॉ.लोहिया कार्ल मार्क्स के विचारों से सहमत थे किन्तु वे साम्यवादियों से सहमत नही थें। वे साम्यवादियों के भूमि के पुनर्विभाजन को एक मजाक तथा निरर्थक क्रूरता मानतें थे। वे इसलिए भी साम्यवादियों से सहमत नहीं हो पाते थे , क्योकि व्यवहार में साम्यवादी , आर्थिक दरिद्रता को अस्त्र बनाकर राज्य के विरूद्ध विद्रोह करा देते है , अथवा उस पर अनुचित दबाव डालतें है। साम्यवादियों की पूँजीवाद की व्याख्या उन्हें स्वीकार्य न थी। वे वर्ग संघर्ष की साम्यवादी पद्धति को भी अनैतिक मानते थे।

## गांधीवादी पद्धति में आस्था

समाजवाद में पूर्ण आस्था होते हुए भी डॉ . लोहिया को हिंसा से चिढ थी। वे सच्चे गांधीवादी थे किन्तु उन्होने अपनी विशिष्ट शैली में समाजवादी चिन्तन में गांधीवाद प्रबलता के प्रमुख सिद्धांतों का समावेश करने का प्रबलता से प्रयास किया था। समाजवाद के उददेश्यों को प्राप्त करने के लिए वे गांधीवादी जन आंदोलनों को बहुत प्रभावी मानते थें। वे अंहिसा को सिद्यान्ततः तो स्वीकार करते थे किन्तु मन , वचन एवं कर्म से दूर रहने की गांधी जी की बात को वे अन्तकरण से गम्भीरता से स्वीकार नही कर पाते थे। अपने विरोधियों के लिए वे कटु भाषा का प्रयोग करने में संकोच नही करते थे।

## धर्म एवं राजनीति के समन्वय पर बल

डॉ लोहिया कहा करते थे कि राजनीति के बिना धर्म निष्प्राण हो जाता है तथा धर्म के बिना राजनीति कलही बन जाती है। वे धर्म को "दीर्घकालीन राजनीति "तथा राजनीति को "अल्पकालीन धर्म " कहते थे।

### सत्य के संबंध में विचार

डॉ.लहिया सत्य के महत्व को उसके आध्यात्मिक मूल्य के कारण नहीं बल्कि समाज व्यवस्था के लिए उसकी उपयोगिता के कारण स्वीकार करते थे। वे छल – कपट को हानिकारक मानते थे। वे आलस्य , कर्तव्य निष्ठा का अभाव तथा निष्क्रियता की अवस्था को असत्य एवं सामाजिक प्रगति के मार्ग के बाधक मानतें थें। वे समानता पर आधारित सामाजिक न्याय को सत्य मानते हुए , उसमें विश्वास रखते थे।

### भारत की पुनः एकता स्थापन में विश्वास

डॉ . लोहिया ने भारत के विभाजन को परिस्थितियों वश स्वीकार किया गया विभाजन माना था। वे मानते थे कि भारत प्रकृति से एक है अतः खण्डित हो जाने के बाद भी वह एक दिन पुनः अवश्य ही एक हो जाएगा।

### चौखम्बा राज्य की परिकल्पना

डॉ . लोहिया ने चार स्तम्भों वाले राज्य की परिकल्पना प्रस्तुत की थी। उन्होने इस राज्य में केन्द्रीकरण तथा विकेन्द्रीकरण की परस्पर विरोधी मानी जाने वाली विचार धाराओं का समन्वय करने का प्रयास किया था। इस व्यवस्था के अंतर्गत गाँव , मण्डल , प्रान्त तथा केन्द्र सभी के महत्व को स्वीकार किया गया है , तथा उन्हें एक कार्यमूलक संघवाद की व्यवस्था के अंतर्गत एकीकृत कर दिया जाएगा। इस राज्य में स्तम्भी का संगठन इस प्रकार किया जाएगा , कि सभी स्तम्भ एक सूत्र में बंधे रहेगे। ऐसे राज्य में कलेक्टर जैसा नौकरशाही सत्ता का प्रतीक पद समाप्त कर दिया जाएगा। डॉ . लोहिया मानते थे कि कलेक्टर का पद या ऐसे पद केन्द्रीकरण की बदनाम संस्थाऐं है। ऐसे पदों को समाप्त कर दिया जाना चाहियें।

### चौखम्बा राज्य में यह ध्यान रखा जाएगा कि ,

सम्पूर्ण सरकारी एवं योजना व्यय का एक चौथाई भाग ग्राम मण्डल एवं नगर पंचायत के माध्यम से व्यय किया जाय।

1. पुलिस व्यवस्था इन ग्राम , मण्डल तथा पंचायतों के अधीन रहेगी।
2. विभाजित कर दिये जाऐगे।
3. कृषि,उद्योग तथा अन्य प्रकार की सम्पति का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाएगा। यह सम्पति ग्राम , मण्डल , एवं नगर पंचायतों के अधीन रहेगी। तथा उन्ही के द्वारा शासित रहेगी।
4. चौखाम्बाराज्य में राजनीतिक प्रशासनिक एवं आर्थिक विकेन्द्रीकरण की दिशा में प्रयास किये जाऐगें तथा छोटी मशीनों का अधिकाधिक उपयोग किया जाएगा।
5. चौखम्बाराज्य का अगला पांचवा स्तम्भ विश्व राज्य होगा जो कि विश्वशांति की स्थापना की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण कदम होगा।

डॉ . लोहिया मानते थे कि उपरोक्तानुसार चौखम्बा राज्य के गठन से ही सामान्य व्यक्ति को स्फुर्ति प्राप्त होगी तथा लोकतंत्रिक संवैधानिक सिद्धांतों के निर्माण एवं उनके व्यावहारिक स्वरूप को निखारने के प्रयासों को निरंतरता प्राप्त होगी।

## सप्त क्रांति का सिद्धांत

डॉ . लोहिया अनुभव करते थे कि किसी एक जुट कार्यक्रम के अभाव में भारत में प्रतिपक्षी दल आपस में लडते रहते है। इसका लाभ सत्तारूढ़ दल को अनायास ही प्राप्त हो जाता है। उन्होने समाजवाद के सार्वभौम सात सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप देने की बात कही थी। ये हैं –

1. स्त्री पुरूष समानता को स्वीकृति ,
2. जति सम्बन्धी तथा जन्म सम्बन्धी असमानता की समाप्ति ,
3. रंगभेद पर आधारित असमानता की समाप्ति ,
4. विदेशियों द्वारा दमन की समाप्ति तथा विश्व सरकार का निर्माण।
5. व्यक्तिगत सम्पति पर आधारित आर्थिक असमानताओं का विरोध , तथा उत्पादन में योजनाबद्य वृद्धि।
6. व्यक्तिगत अधिकारों के अतिक्रमण का विरोध ,
7. युद्ध के शस्त्रों का विरोध तथा सविनय अवज्ञा सिद्धांत को स्वीकृति।

## विश्व संसद का समर्थन

डॉ. लोहिया नें वैश्विक समस्याओं को सुलझाने के लिये विश्व संसद का समर्थन किया था। वे चाहते थे कि व्यस्क मताधिकार के आधार पर चुनी गई विश्व पंचायत की स्थापना होनी चाहिये। इस पंचायत को समस्त राज्यों के युद्ध बजट का एक चौथाई अथवा पांचवा हिस्सा प्राप्त होना चाहिये। वे मानते थे कि सत्याग्रह के द्वारा भी विश्व पंचायत की स्थापना संभव है।

## निरंकुश शासन का विरोध

डॉ. लोहिया को निरंकुश शासन स्वीकार्य नहीं था। वे आर्थिक एवं राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के समर्थक थे। वे आर्थिक एवं राजनीतिक सत्ता को राज्य , प्रांत , जिला तथा ग्राम स्तर पर बांटकर चौखम्बा राज्य की स्थापना करना चाहते थें।

## भारत–विभाजन पर लोहिया के विचार

उस समय की तमाम ऐसी घटनाओं और स्थितियों का जिनके प्रति एक आम भारतीय नागरिक के मन में बहुत स्पष्ट और तार्किक व्याख्या नहीं है, लोहिया ने अपनी पुस्तक 'गिल्टी मैन एंड इंडियाज पार्टीशन' (भारत विभाजन के गुनहगार) में परद दर परत रहस्यों को खोला है। लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि उस समय के पूरे आंखों देखे इतिहास को ही नहीं, बल्कि उसके एक सक्रिय, जीवंत पात्र रहे लोहिया की बातों को आजाद भारत में सत्तारूढ़ दल द्वारा एक विपक्षी नेता की 'खीझ' से ज्यादा नहीं समझने दिया गया, जबकि सच्चाई यह है कि सत्ता हस्तांतरण के खेल की असलियत संग्रहालयों में दफन दस्तावेजों से ज्यादा लोहिया जैसे नेताओं को भी मालूम थी जिसे होते हुए उन्होंने अपनी आंखों से देखा था।

## निष्कर्ष

डॉ.राममनोहर लोहिया पर मार्क्सवाद एवं गाँधीवाद दोनों का बहुत गहरा प्रभाव था। उन्होने अपनी निराली शैली में इन दोनों महान विचारधाराओं के प्रमुख सिद्धांतों की व्याख्या की तथा उनमें समन्वय स्थापित

करने का प्रयास किया। मुक्त चिन्तन,निर्भीकता , मौलिकता और अनूठा समन्वयवाद उनके व्यक्तित्व की सहज विशेषताऐं थी। इन्ही के आधार पर उन्होने एक नई समाजवादी व्यवस्था का स्वप्न देखा था। उन्होने आधुनिक सभ्यता को स्वीकार किया किन्तु उसमें भी सुधार करते हुए उसे और अधिक आधुनिक बनाने का प्रयास किया। डॉ.लोहिया शांतिवादी होते हुए भी प्रबल विद्रोही और महान क्रान्तिकारी थे। आधुनिक भारत को इसी की आवश्यकता है।

**संदर्भ :–**


1. व्हील ऑफ़ हिस्ट्री रू राम मनोहर लोहिया।
2. संग्रहीत प्रति"- मूल से 14 नवंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 23 मार्च 2009.
3. लोहिया के विचार
4. डॉ लोहिया की सप्तक्रांति के उद्देश्य
5. मार्क्स , गांधी एण्ड सोशलिज्म रू राम मनोहर लोहिया।
6. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन रू डॉ. वी.पी.वर्मा।
7. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन: डॉ. पुरूषोत्तम नागर